इतिहास - शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

इतिहास की शिक्षा किस प्रकार दी जाए ? इसके सम्बन्ध में कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं, जो देखने में साधारण प्रतीत होते हैं, परन्तु यदि शिक्षक उनका अनुसरण करे तो उसे शिक्षण में सफलता प्राप्त होती है। ये सामान्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं:-

① - प्रारम्भिक कक्षाओं में निश्चित तथा बोधगम्य तथ्यों को प्रस्तुत करना चाहिए।

② - छोटी कक्षाओं में श्रव्य-दृश्य सामग्री तथा अभिनयात्मक रीति का प्रयोग करना चाहिए।

③ - कथन-कौशल द्वारा छात्रों की मानसिक प्रक्रियाओं को सक्रिय बनाना चाहिए।

④ - सामान्य विचारधाराओं या सामान्यीकरण का उपयोग उच्च कक्षाओं में होना चाहिए। परन्तु इन विचारधारायों को समझने के लिए मूर्त तथ्यों का उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से सामान्यीकरण असीमित नहीं हो पाता।

⑤ - प्रत्येक स्तर पर अतीत का वर्तमान से प्रसंगानुकूल सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

⑥ - ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत करते समय मानचित्र, श्यामपट्ट आकृति आदि का उपयोग किया जाय। इसके अतिरिक्त बालक द्वारा ऐतिहासिक स्टलस का उपयोग करने पर बल देना चाहिए।

⑦ - तथ्यों को पृथक रूप से प्रस्तुत नहीं किया जाय, वरन कार्य-कारण सम्बन्ध के साथ उनको छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

⑧ - इतिहास को सजीव एवं रोचक बनाने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाय, उनका चयन पाठ के प्रारम्भ करने से पूर्व होना चाहिए।

⑨ निरर्थक तथ्यों एवं जटिलता को समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

⑩ इतिहास के सभी अंगो पर प्रकाश डालना चाहिए।

...चार्य
मीरा मे...रियल महाविद्यालय

विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इतिहास-प्रतिपादन

(1) प्राथमिक (प्राइमरी) स्तर

इस अवस्था के छात्र कहानी सुनना तथा कहानी कहना अधिक पसन्द करते हैं। इस अवस्था को 'कहानी कहने की अवस्था' भी कहा जाता है। कहानियाँ चाहे विश्व-इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास या प्रान्तीय-इतिहास से ली जायें परन्तु उनका चयन बड़ी सतर्कता के साथ करना चाहिए।

कहानी क्रियाशीलता से पूर्ण होनी चाहिए अर्थात वह निष्क्रियता उत्पन्न न करे वरन् क्रियाशील, संक्षिप्त तथा सजीव हो। कहानी छात्रों के मानसिक तथा शारीरिक विकास रुचि-ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर हो।

कहानी की भाषा छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए। वाक्य-विन्यास सरल स्वयं होता हो, शब्द सुगम तथा बालकों की ग्राह्य-शक्ति के अनुसार हों। समास-शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं होना चाहिए, जिससे कहानी के प्रत्येक अंग का चित्र छात्रों के सम्मुख उपस्थित हो जाय और कहानी सुनते समय छात्र ऐसा अनुभव करने लगें-मानो प्रत्येक घटना उनके समक्ष ही घटित हुई हों।

इन कक्षाओं को पढ़ाने के लिए अध्यापक का अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस स्तर के अध्यापक को कहानी कला में निपुण होना चाहिए। कहानी कहना एक कला है, कहानी वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति कवि के समान प्रखर-बुद्धि से युक्त होता है, परन्तु इस स्तर के अध्यापक को अपने परिश्रम से इस कला को सीखना चाहिए और एक अच्छा कहानी कहने वाला बनने का प्रयास करना चाहिए।

07/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया